

**स्थापयितव्य वि.** (तत्.) दे. स्थापनीय।

**स्थापयिता वि./पुं.** (तत्.) दे. स्थापक।

**स्थापित वि.** (तत्.) 1. जिसकी स्थापना की गई हो, कायम किया हुआ 2. अच्छी तरह से जमाया/रखा/बैठाया हुआ 3. निर्धारित, निश्चित 4. व्यवस्थित 5. दृढ़, मजबूत, पक्का।

**स्थायी वि.** (तत्.) 1. हमेशा रहने वाला, अक्षय 2. सदैव स्थित रहने वाला 3. किसी स्थान पर स्थित होने वाला 4. बहुत दिनों तक चलने वाला, टिकाऊ पुं. स्थायी भाव।

**स्थायीकरण पुं.** (तत्.) 1. किसी वस्तु, कार्य आदि को स्थायी रूप देना 2. अस्थायी या परिवीक्षा के अधीन काम कर रहे व्यक्ति का पद/नौकरी स्थायी करना 3. उक्त कार्य के लिए दी जाने वाली आज्ञा/स्वीकृति।

**स्थायी कोष पुं.** (तत्.) किसी संस्था आदि का वह कोष या मूलधन जो कभी व्यय नहीं की जाती और उसे स्थायी बनाए रखने के लिए बराबर संचित होती रहती है। इसे दान/चंदे आदि से बढ़ाया जाता है और बैंक आदि से प्राप्त ब्याज को ही संस्था व्यय करती है। endowment

**स्थायी निधि स्त्री.** (तत्.) दे. स्थायी कोष।

**स्थायी परिसंपत्ति स्त्री.** (तत्.) ऐसी संपत्ति जो अधिक समय तक स्थायी रहती हो और जिसे आसानी से नकदी में बदला न जा सके।

**स्थायी भाव पुं.** (तत्.) 1. संस्कार रूप में सभी मानवों में हमेशा रहने वाले तीव्र भाव, मौलिक मनोवेग। साहि. प्रेम, हर्ष, हास्य, खेद, दुःख, शोक, भय, वैराग्य आदि 9 तीव्र भाव जो मूलतः सभी मनुष्यों के मन में प्रायः सदा निहित रहते हैं और कुछ विशिष्ट अवसरों/स्थितियों/कारणों से स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। ये भाव काव्य-नाटक आदि के पाठक/दर्शक द्वारा 'रस' के रूप में आस्वाद्य होते हैं। इन्हीं भावों के आधार पर साहित्य में नौ रस स्थिर हुए हैं- शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स और शांत, किसी दूसरे भाव (संचारी भाव) के आने पर भी

प्रबलता और स्पष्ट रूप में व्यक्त होने की वजह से इन्हें स्थायी भाव कहा जाता है।

**स्थायी समिति स्त्री.** (तत्.) किसी संस्था आदि द्वारा विविध कामों को करते रहने के लिए स्थायी रूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त समिति। standing committee

**स्थाल पुं.** (तत्.) 1. बरतन, पात्र 2. बड़ी थाली 3. देगची, पतीली 4. दाँत का खोखलापन।

**स्थाली स्त्री.** (तत्.) 1. भोजन बनाने और खाने-पीने में काम आने वाले मिट्टी के बरतन 2. थाली 3. खीर 4. पाटला नामक वृक्ष।

**स्थाली पाक पुं.** (तत्.) 1. दूध में चावल या जौ डालकर पकाने से बनाया चरु जिसे आहुति के लिए प्रयुक्त किया जाता है 2. वैद्यक में लोहे की एक पाक-विधि।

**स्थाली पुलाक न्याय पुं.** (तत्.) एक प्रकार का न्याय या कहावत, जिस प्रकार हाँडी में उबले चावलों का एक दाना उठाकर देखने से ही पता चल जाता है कि सभी चावल पक गए हैं अथवा नहीं, उसी प्रकार से आशय का संकेत करने के लिए इसे प्रयुक्त किया जाता है।

**स्थाल्य वि.** (तत्.) 1. स्थल से संबंधित 2. स्थल पर होने वाला पुं. 1. अन्न 2. जड़ी-बूटी।

**स्थावर वि.** (तत्.) एक ही जगह पर स्थिर रहने वाला, अचल, गतिहीन क्रियाहीन, निष्क्रिय पुं. 1. पर्वत, पहाड़ 2. निर्जीव वस्तु, जड़ पदार्थ 3. अचल संपत्ति विलो. जंगम।

**स्थावर जंगम पुं.** (तत्.) 1. स्थावर पदार्थ और जंगम प्राणी 2. चल-अचल संपत्ति।

**स्थावरता स्त्री.** (तत्.) स्थावर होने का गुण, भाव या अवस्था।

**स्थावर-नाम पुं.** (तत्.) वह पाप कर्म जिसके उदय से जीव स्थूल शरीर में जन्म लेता है (जैन)।

**स्थावर राज पुं.** (तत्.) पर्वतराज, हिमालय।